International Journal for Research Technology and Seminar
ISSN: 2347-6117 (Print) | ISSN: 3048-703X (Online)
International | Peer-reviewed | Refereed | Indexed Journal
Volume 28 | Issue 02 | Jan-Jun 2025

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली व वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

[1]चरत लाल मीना*, [2]लुकमान अली

[1,2]असिस्टेंट प्रोफेसर – गेस्ट फैकल्टी, राजकीय महाविद्यालय, बौंली, सवाई माधोपुर, राजस्थान, भारत

Email ID: [1]charatlalgothwal@gmail.com, [2]luqmanali78@gmail.com

Accepted: 02.02.2025 **Published**: 11.02.2025

मुख्य शब्दः वैदिक कालीन शिक्षा, गुरुकुल, परंपरा, संस्कृति, नैतिकता, चिंतन, वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

शोध आलेख सार

इस शोध पत्र में वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान, नैतिकता एवं आध्यात्मिक उन्नति था, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः व्यावसायिक योग्यता एवं तकनीकी ज्ञान पर केंद्रित है। शोध में प्राचीन गुरु–शिष्य परंपरा, गुरुकुल प्रणाली, शिक्षा के विषय, शिक्षण विधियाँ एवं समाज पर इसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ, इसकी चुनौतियाँ एवं सुधार की संभावनाओं की चर्चा की गई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों एवं व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता था, जबकि वर्तमान प्रणाली तकनीकी एवं व्यावसायिक दक्षता को प्राथमिकता देती है। निष्कर्षतः, यह शोध दोनों प्रणालियों की विशेषताओं की तुलना कर उनके सकारात्मक पक्षों को समाहित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिससे एक अधिक संतुलित एवं समग्र शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सके।

पहचान निशान

*Corresponding Author

© *International Journal for Research Technology and Seminar*, चरत लाल मीना, *All Rights Reserved.*

प्रस्तावनाः

वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में गुरु का स्थान ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना गया है कबीर दास जी ने गुरु के बारे में इस प्रकार कहा है कि,

गुरु गोविंद दोहू खड़े काके लागू पाए ।
बलिहारी गुरु आपने जो गोविंद दियो मिलाए ।।

वैदिक शिक्षा का तात्पर्य वेद पुराणों का अध्ययन करना मात्र नहीं था अपितु गुरुकुल के नियम तथा भारतीय संस्कृति को समझना भी था । गुरुकुल के वास्तविक स्वरूप में विद्यार्थियों के समक्ष अपने जीवन में उस शिक्षा को ग्रहण कर अपना जीवन यापन व्यवस्थिक ढंग से शुरू कर सके । वैदिक शिक्षा कालीन शिक्षा का मूल भारतीय शिक्षा दर्शन मै निहित है । वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास एवं श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना था । शिक्षा के द्वारा उनके स्वभाव मै परिवर्तन ला कर नैतिक परिवर्तियों का विकास किया जाता था एवं छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता था । जैसे, आत्मसम्मान की भावना , आत्मसंयम, आत्मत्याग , व स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति आदि पर बल दिया जाता था ।

वैदिक कालीन शिक्षा का अर्थः

शिक्षा का वास्तविक अर्थ होता है कुछ सीख कर अपने को पूर्ण बनाना । किसी भी राष्ट्र अथवा समाज मै शिक्षा सामाजिक नियंत्रण व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है । हम सभी जानते है शिक्षा हरे जीवन के लिए अति आवश्यक है शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान होता है । पहले शिक्षा गुरुकुल मै ही गुरु के सानिध्य में होती थी लेकिन आज कल के आधुनिक युग में विद्यालय महाविद्यालय में शिक्षा शिक्षक देते है । प्राचीन समय में गुरु पर अभिभावक भी पूर्ण विश्वास करते थे और गुरु के अध्यापन मै दखल नहीं देते थे । गुरु स्वच्छंद रहकर बिना किसी दबाव के संपूर्ण विधाओं में कौशल युक्त जीवन उपयोगी शिक्षा प्रदान करते ये । छात्रों को औपचारिक शिक्षा के साथ साथ मानसिक आध्यात्मिक शारीरिक और व्यावहारिक रूप से भी सक्षम बनाया जाता था ।

1. आध्यात्मिकता के छेत्र मै वैदिक शिक्षा की उपयोगिताः

वैदिक कालीन भारतीय शिक्षा का विकास भी भारतीय दार्शनिक परंपरा के अनुरूप ही हुआ है जीवन तथा संसार की चन क्षणभंगुरता का अनुमान तथा मृत्यु तथा भौतिक सुखों की सारहीनता के भावों ने एक विशेष दृष्टिकोण प्रदान किया और वस्तुतरू संपूर्ण शिक्षा परंपरा इन्हीं सिध्दांतों पर विकसित हुई यही कारण था कि भारतीये ऋषियों ने अघ्श्य जगत ओर आध्यात्मिक सत्ता के संगीत गए ओर अपने संपूर्ण जीवन को उसी के अनुरूप डाला । जीवन की गूढ़तम समस्याओं को भारतीय ऋषियों ने जीवन के साधारण कार्य छेत्र

मै सुलझा दिया था । इस पद्धति को वर्तमान काल में, " क्रिया से ज्ञान प्राप्त करना " कहते है । ओर अमेरिका को इस शिक्षा का प्रवर्तक समझा जाता है । भारतीय ऋषियों तथा विद्यार्थियों का एक प्रमुख शिक्षण सुत्र था जीवन की प्रयोगशाला शिक्षा परीक्षणो के लिए थी जिसमें सफलता प्राप्त करके प्राचीन शिक्षा शास्त्रियों ने एक परंपरा का निर्माण किया ।

यह परंपरा थी भिक्षा द्वारा अन्न प्राप्त करना और इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के अहंकार का विनाश करके उसे व्यावहारिक जगत के सामने ला खड़ा करना था ओर समाज के संपर्क मे आने से उसे वास्तविक जीवन का जान भी होता था यह विद्यार्थियों के लिए स्वावलंबन तथा समाज के सामने उनकी कृतज्ञता का पाठ था ।

2. सामाजिक क्षेत्र में वैदिक कालीन शिक्षा की उपयोगिताः

इस समय की शिक्षा जीवन।ऐ उपयोगी थी गुरुकुल मै रहते हुए विद्यार्थी समाज के संपर्क मे आता था। गुरु के लिए ईंधन व पानी लाना व अन्य कार्यों को करना उसका कर्तव्य समझा जाता था । इस प्रकार वह गृहस्थ जीवन की शिक्षा को प्राप्त करता था । गुरु की सेवा करना व गुरु की गायों को चराना भी एक प्रकार से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना था । इससे विद्यार्थी कुछ जीवन उपयोगी कार्य जैसे पशुपालन, कृ षि तथा डेयरी फॉर्म इत्यादि मै शिक्षा प्राप्त कर लेता था । आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैदिक शिक्षा प्रणाली से पूर्णतः अलग है फिर भी वर्तमान शिक्षा को नियोजित करने व इसकी अनेक समस्याओं का समाधान खोजने की एक मूलभूत आधार सिद्ध हो सकती हैं ।

पश्चिमी देशों की संस्कृति के कारण हम अपने पुरातन आदर्शों को भुलाते जा रहे है । शिक्षा हमारे जीवन से दूर होती जा रही है । छात्र, असंतोष, सामाजिक बुराइयां, राष्ट्रिय विघटन, भाषा की समस्या, दिन प्रतिदि विकराल होती जा रही है । प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों का वर्तमान शिक्षा में समावेश करके इन समस्याओं का समाधान संभव हो सकता हैं। जब हमारी शिक्षा में प्राचीन सनातन आदर्श को सम्मिलित किया जाएगा तब ही हमारी शिक्षा प्रणाली अतित की भांति विदेशी छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर सकेगी ।

वैदिक शिक्षा से तात्पर्य उच्च विचारों, स्वअनुशासन, स्नेह व श्रद्धा पर आधारित अध्यापक छात्र सम्बन्ध, शहर के कोलाहल से दूर शांत व प्राकृतिक परिसर व छोटी कक्षाएं व्यस्थ दिनचर्या अच्छी आदतों का निर्माण विश्व बंधुत्व के भाव से परिपूर्ण पाठ्यवस्तु व बुरी आदतों से रहित जीवन आदि अनेक ऐसी बाते है जो आज भी शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती हैं।

3. नैतिकता के छेत्र मै वैदिक शिक्षाः

प्राचीन काल में शिक्षा प्रकृति की गोद में अपने गुरु के चरणों मै बैठ कर जीवन की समस्याओं को सुनना उन पर मनन करना वह चिंतन करना था जीवन उसके लिए एक प्रयोगशाला के समान था । शिक्षार्थी का गुरुकुल मै रहना व गुरु की सेवा करना एक अनूठी भारतीय परंपरा थी। इस प्रकार गुरु के निकटतम रहने से गुरु के गुणों का समावेश शिक्षार्थी मै हो जाता था विद्यार्थी के व्यक्तित्व के पुर्ण विकास के लिए यह अनिवार्य था कि गुरु के निकट रहने पर उसके आदर्श, परंपराओं, सामाजिक नीतियों का शिक्षार्थी पर अच्छा प्रभाव देखने को मिलता था ।

4. शिक्षा के छेत्र में वैदिक शिक्षा की उपयोगिताः

प्राचीन काल में सभ्यता व संस्कृति को बनाने मै तथा परिवर्तन लाने में राजनीतिक, आर्थिक, व सामाजिक कारणों की अपेक्षा धर्म अधिक प्रभावशाली रहा है। उस समय धर्म ने हिन्दुओं की संपूर्ण जीवन शैली को प्रभावित किया। इसलिए प्राचीन काल मै शिक्षा भी धर्म से निर्देशित होती थी। धर्म के एक ओर अंग के रूप में शिक्षा सदियों तक पढ़ाई जाती रही थी प्राचीन भारतीय शिक्षा भी वास्तव मे धर्म की देन थी।

निःसंदेह प्राचीन कालीन शिक्षा की अनेक विशेषताएं वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। वैदिक शिक्षा के उद्देश्य, छात्र अध्यापक संबंध, अनुशासन व्यवस्था, संस्कार की अनिवार्यता, उपदेश तथा विनयशीलता, नैतिक चरित्र, कार्य अनुभव, व गुरु श्रद्धा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समाहित करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। जिस प्रकार वैदिक शिक्षा में चरित्र निर्माण करना मुख्य उद्देश्य था उसी प्रकार वर्तमान शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है। वर्तमान शिक्षा व्यक्तिगत विकास पर आधारित है। इसमें आध्यात्मिक शिक्षा का कोई उद्देश्य निश्चित ही नहीं है क्योंकि यह शिक्षा क्रिया केंद्रित है और व्यावहारिक हैं।

5. वैदिक शिक्षा प्रणालीः

वैदिक शिक्षा अर्थात् वेदों के अनुसार शिक्षा का अर्थ ज्ञान अथवा विद्या की प्राप्ति है। वेदों के आधार पर शिक्षा, ज्ञान, आत्मा व ब्रह्मा की खोज है शिक्षा का उद्देश्य आत्मा अनुभूति व आत्मबोध है ।

6. वर्तमान शिक्षा प्रणालीः

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से तात्पर्य है कि कुछ सीख कर अपने को पूर्ण बनाना। इस दृष्टि से शिक्षा को मानव जीवन की आंख भी कहा जाता है। वह आंख जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योग्य बना देती है कि वह भला बुरा सोच कर प्रगतिशील कार्य कर सके ।

International Journal for Research Technology and Seminar
ISSN: 2347-6117 (Print) | ISSN: 3048-703X (Online)
International | Peer-reviewed | Refereed | Indexed Journal
Volume 28 | Issue 02 | Jan-Jun 2025

निष्कर्ष:

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था । मोक्ष की प्राप्ति के लिए जप, तप, व्रत, ध्यान एवं हवन आदि क्रियाओं का वातावरण तैयार करना था । जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास है । वेदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम धार्मिक आध्यात्मिक एवं भौतिकता पर आधारित था । जबकि वर्तमान में केवल भौतिकता है । पाठ्यक्रम मै विद्यार्थियों की रुचि एवं शिक्षा का कोई भी स्थान वैदिक कालीन शिक्षा मै नहीं था जबकि वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की रुचि एवं इच्छा के अनुरूप संगठित किया जाता है । वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक विकास के लिए व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षण विधि जैसे प्रदर्शन विधि, योजना विधि, कंप्यूटर अनुदेशन विधि, प्रयोगशाला विधि आदि पर अत्यधिक बल दिया है । अतः कहा जा सकता है कि वैदिक काल मै समाज का स्वरुप पारिवारिक था जबकि वर्तमान में यही संबंध भौतिकता पर आधारित है।

संदर्भ ग्रंथ सुची:

1. अरविन्द_शिक्षा के आयाम_अरविंद आश्रम पांडिचेरी ।
2. राजमली पांडे_हिंदू धर्म कोश_हिंदी संस्थान लखनऊ ।
3. डॉक्टर रजनी शर्मा_2006_शिक्षा एवं भारतीय समाज ।
4. प्रोफेसर माथुर एश्वर पारीक_2006_शिक्षा के आयाम ।
5. ओम प्रकाश_प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास ।
6. राजस्थान पत्रिका_वैदिक शिक्षा संबंधित लेख ।
7. आर.के.शर्मा_शिक्षा के उद्देश्य ज्ञान एवं पाठ्यचर्या ।
8. रीता अरोरा_शिक्षा मै नवचिंतन ।
9. ओपी शर्मा_2013 – 14_शिक्षा के दार्शनिक आधार ।
10. सरयू प्रसाद चौबे_भारतीय शिक्षा का इतिहास ।

International Journal for Research Technology and Seminar
IJRTS
Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation